उस रात चाँद नहीं निकला : एक कहानी कहन

मेलोडी खलखो

कक्षा 1 से 7 तक के बच्चों को कहानी सुनाने का अनुभव इस लेख में है। कहानी का चयन तो सुन्दर है ही, लेकिन उससे भी सुन्दर और संवेदनशील हैं बच्चों के जवाब। ये जवाब दर्शाते हैं कि बच्चे कितना कुछ सोच और समझ सकते हैं। उनकी इस सोच को जानकर, आने वाले समाज की एक सुखद कल्पना भी दिमाग़ में बनती है। -सं.

हाल ही में मैंने बच्चों को एक कहानी पढ़कर सुनाई। उसका नाम है *वो रात।* इस कहानी के लेखक हैं बीजल वच्छरजानी, और चित्रांकन किया है सृजना श्रीधर ने। कहानी है चैतू और उसके परिवार की। यह परिवार एक ऐसे परिवेश में रह रहा है जहाँ लड़ाइयाँ और हादसे चल रहे हैं। इस कहानी ने कुछ सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक मुद्दों को हमारी नज़र में लाने की कोशिश की है। लोगों को लोगों से डर, किसी अपने को खोने का डर, नज़दीकी इंसान की चिन्ता करने जैसी भावनाओं को समझाने की कोशिश इस लेख में की गई है।

बच्चों के लिए मैंने यह कहानी क्यों चुनी ?

जब हम कहानी सुनाने की बात करते हैं, या बच्चों को कहानी सुनाते हैं, हम उन ख़ास तत्त्वों और छवियों को, जो कहानी में होते हैं, अपने शब्दों और हाव-भाव के साथ रखते हैं। इसमें बच्चे न केवल मज़े लेते, और उत्सुकता दिखाते हैं बल्कि सुने हुए की कल्पना भी करते हैं।

बचपन से लेकर आज तक जब भी किसी ने मुझे कहानी सुनाई, उस कहानी में जंगल, शेर, सियार, आदि का होना निश्चित होता था, या फिर वह कहानी सुनाने वाले की अपनी कोई निजी कहानी होती थी। उस वक़्त मेरे लिए कहानी का मतलब यहीं तक सीमित था। शायद इसीलिए क्योंकि किताबों और दूसरी प्रकार की कहानियों से मैं कभी परिचित नहीं हुई थी। इन जंगल वाली कहानियों को हम बच्चे मज़े के साथ सुनते थे, और उनके बारे में कल्पना भी करते थे, लेकिन कहानी सुनकर अकसर भूल जाते थे। शायद इसलिए क्योंकि वे सभी

कहानियाँ कुछ-कुछ एक जैसी होती थीं। लेकिन ऐसी कहानियाँ जो लोगों के बारे में होती थीं वे याद रह जाती थीं। यह किताब, और इसकी कहानी भी कुछ ऐसी ही है जो मेरे दिल को छू गई। पढ़ने के पहले, पढ़ने के दौरान, और पढ़ने के बाद भी, कहानी मेरे सामने सवालों के ढेर रखती गई, और उनपर चिन्तन व विश्लेषण करने पर मजबूर करती गई। इसे पढ़ते समय मैंने जो भी अनुभव किया, सोचा अपने केन्द्र के बच्चों के साथ भी उन अनुभवों को साझा किया जाए। बस, मैं इस कहानी को बच्चों को सुनाने की तैयारी में जुट गई। कई दफ़ा पढ़ने के बाद, इस कहानी के सभी शब्द, सीन, सारे भाव मेरे दिलो-दिमाग़ में छप गए। और जब हम किसी भी चीज़ को दिल से बोलने लगते हैं, कहानी में उतार-चढ़ाव, लय, स्वर, शारीरिक हलचल / हाव-भाव कहानी के अनुरूप होते ही जाते हैं।

कहानी कहन

मैंने ग्राम सिलारी के मोहल्ला शिक्षा गतिविधि केन्द्र में यह कहानी सुनाई। उस दिन कक्षा पहली से सातवीं तक के तक़रीबन 15 बच्चे उपस्थित थे। जैसे ही बच्चों को पता चला कि आज मैं कहानी सुनाने वाली हूँ, वे बहुत ख़ुश हुए। हम सभी गोल घेरा बनाकर बैठे ताकि सब बच्चे मुझे देख सकें, और मैं उन सबको। कहानी सुनने के लिए सभी बच्चे शान्त बैठ गए। एक-दो बच्चे ऐसे थे जिन्हें मेरे सामने ही बैठना था। सबसे पहले मैंने एक सवाल से बातचीत शुरू की। मैंने पूछा, "कोई अन्दाज़ा लगा सकता है कि आज मैं किस तरह की कहानी सुनाने वाली हूँ?" बच्चों के जवाब थे, "दीदी, हाथी वाली; भूत वाली; परी वाली।" मैंने बच्चों को कहा, "नहीं, आज की कहानी कुछ अलग है, वो ध्यान से सुनने पर ही पता चलेगा।"

मैंने कहानी शुरू की, "आवाज़ों को सुनकर चैतू जाग उठी। वे ग़ुस्से में लग रहे थे।" इतना कहने के बाद मैंने देखा कि बच्चे अपने हाथ गाल पर रखे ध्यान से सुन रहे थे, सब एकदम चुप। मैं कहानी सुनाती गई, बच्चे सुनते जा रहे थे। एक पल ऐसा आया जब सभी की आँखों में यह सवाल नज़र आ रहा था कि अब आगे क्या होगा! बच्चों के चेहरों पर डर, घबराहट, और आगे क्या होने वाला है, इसे जानने की इच्छा थी। मैंने कहा, "ड्रैगन जैसी आग की फुफकार में चैतू के पापा को बाहर बुलाया जा रहा था। चैतू उनके हाथ को कसकर पकड़े उन्हें रोकना चाह रही थी, लेकिन उसके पापा ने धीरे से हाथ छुड़ा लिया और वे बाहर चले गए।" यह कहकर मैंने छोटा विराम लिया, और बच्चों को देखने लगी। मुझे पता चल रहा था, उनके दिमाग़ में बहुत सारे सवाल उठ रहे हैं। एक बच्चे ने पूछने की कोशिश भी की थी, लेकिन क्लाइमेक्स को भला कोई बताता थोड़े ही है। ज़रा से ठहराव

के बाद मैंने फिर कहानी कहना जारी रखा। जैसे-जैसे हम कहानी के अन्तिम छोर पर पहुँच रहे थे, उतावलापन और भी बढ़ता जा रहा था। कहानी के आख़िर में बच्चों को राहत मिली जब उन्होंने सुना कि धीरे से दरवाज़ा खुला, और चैतू के पापा कमरे में आए। कहानी यहाँ ख़त्म नहीं हुई थी। अन्त में यह था कि पूरा इलाक़ा शान्त पड़ गया था, आसपास भयानक सन्नाटा था, और धुएँ के पीछे से धुँधला सूरज धीरे-धीरे निकल रहा था।

कहानी ख़त्म तो हुई थी, लेकिन सभी के लिए सवाल खड़े कर गई थी। बच्चे पूछने लगे, और ख़ुद से जवाब भी देने लगे। जैसे– उस मोहल्ले में ऐसा क्या हुआ होगा जो लोग इतने ग़ुस्साए हुए थे, और घरों में आग लगा रहे थे; चैतू और उसके परिवार ने ऐसी क्या ग़लती की होगी जो चैतू के पापा को बाहर बुलाया जा रहा था; जिन लोगों के मकान जल गए वे अब कहाँ रहेंगे; उनके खाने-पीने, कपड़े, पढ़ाई, भेड़-बकरियों का क्या होगा; चैतू का घर तो नहीं जला, लेकिन क्या वहाँ रहना उनके लिए सुरक्षित रहेगा; आदि। मेरे पास इन सब सवालों के कोई जवाब नहीं थे। बच्चे आपस में बात करने लगे, "हो सकता है, हिन्दू-मुस्लिम लोगों का इलाक़ा होगा। वे धर्म को लेकर लड़ाई कर रहे होंगे। ऐसे घर-वर जलाना तो फ़िल्मों में ही देखा है, किताब की कहानी में आज सुनने का मौक़ा मिला है। यह कहानी सच्ची घटना लग रही है।" इन बातों के अलावा मैंने कुछ सवाल रखे, और बच्चों को चित्रों के माध्यम से उत्तर दर्शाने के लिए कहा। कुछ सवालों के जवाब बच्चों से लिखने को कहा। जिन बच्चों को लिखना नहीं आता था उन्होंने मुझे बोलकर बताया, और मैंने बताए अनुसार लिखा। बच्चों के जवाब और चित्र कुछ इस प्रकार थे :

प्रश्न 1. कहानी के अन्त में पूरा इलाक़ा शान्त पड़ गया था, धुँधला सूरज निकल रहा था, अब आगे क्या होगा? क्या माहौल रहेगा?

- पूरा इलाक़ा जल चुका था, लेकिन अब भी धुआँ हर जगह फैला हुआ था। चैतू और उसके परिवार को लगा कि यहाँ रहना उनके लिए ठीक नहीं है, इसीलिए वे लोग इस जगह को छोड़कर जाने के लिए निकल पड़े। साथ में उन्होंने अपने कुत्ते को भी रख लिया। लेकिन चैतू के पापा वह इलाक़ा छोड़कर नहीं जाना चाहते थे क्योंकि उनकी नौकरी वहीं थी, और वे नौकरी छोड़कर नहीं जा सकते थे। चैतू और उसकी माँ की आँखों में आँसू थे क्योंकि इस घर से उनकी यादें जुड़ी थीं, और चैतू अपने दोस्त कबीर से अब कभी मिल नहीं पाएगी।

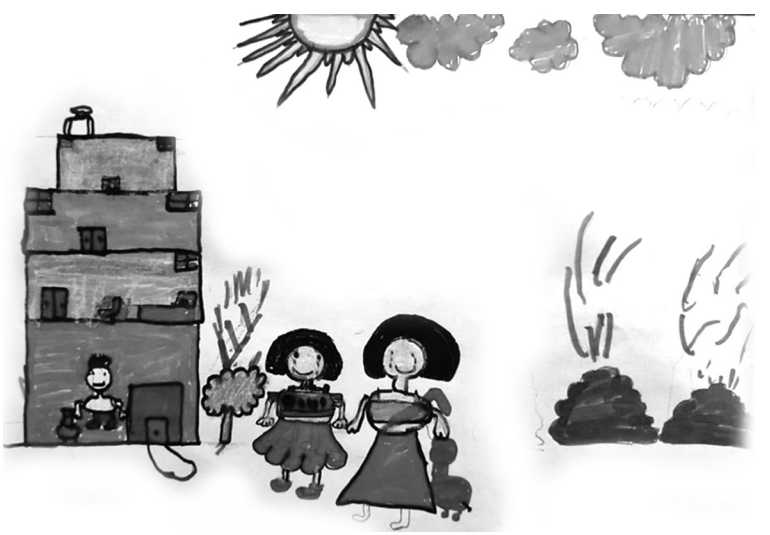

चित्र 1 : दीपाली, शासकीय माध्यमिक शाला सिलारी, कक्षा 7

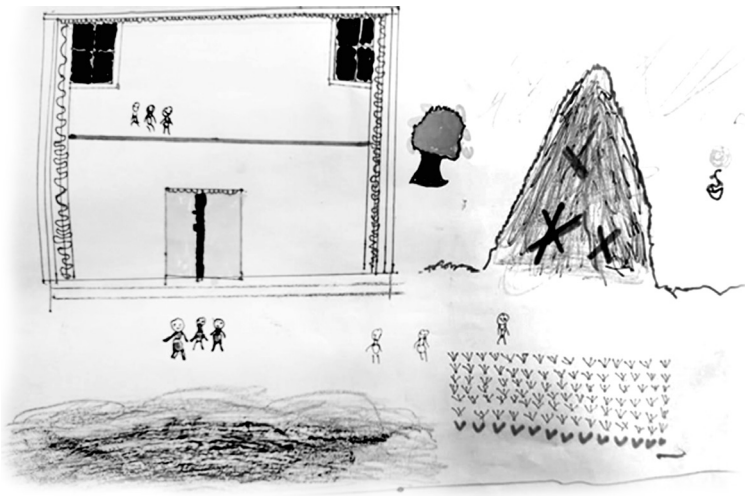

चित्र 2 : आदर्श, शासकीय प्राथमिक शाला सिलारी, कक्षा 4

उसको एक नए स्कूल में दाख़िला लेना होगा। उसके पापा साथ में नहीं जा रहे हैं। डर का माहौल है, आगे कुछ भी हो सकता है, ऐसे में यहाँ अकेले रहना जोख़िम भरा हो सकता है। हो सकता है कुछ महीनों बाद चैतू के पापा की दूसरी जगह नौकरी लग जाए, और वो भी इस घर को छोड़ दें। इस घर को सरपंच ले जाएँगे और इसे किराए पर दे देंगे या बेच देंगे और अपना मुनाफ़ा करेंगे। (दीपाली वर्मा, कक्षा 7)

- कक्षा 4 के आदर्श विश्वकर्मा का कहना था कि हल्का धुआँ है। अभी भी कपड़े और घर जल रहे हैं। धीरे-धीरे पेड़ों पर भी आग लग रही है। रातभर जलने के कारण धुएँ से खिड़कियाँ काली हो गई हैं। आग धीरे-धीरे अनाज की तरफ़ बढ़कर उसे भी जला देगी। बच्चे इधर-उधर भाग रहे हैं। चैतू और उसका परिवार सभी को भागते हुए, जाते हुए देख रहे हैं। वे भी घर छोड़कर जाने के लिए सोच रहे हैं।

प्रश्न 2. अगर आप चैतू की जगह होते तो क्या करते?

- मैं डर का सामना करता, दरवाज़ा बन्द कर देता। दरवाज़े के सामने पलंग, टेबल, कुर्सी जैसी भारी चीज़ें रख देता ताकि दरवाज़ा खुल न सके। पापा को कहता कि बाहर पागल लोग हैं, मत जाइए। बाहर जो लोग आए होते, उन्हें कहता कि तुम लोग चले जाओ, अगर अन्दर आ गए तो कभी लौटकर वापस नहीं जा पाओगे।
- हम पापा को कसकर पकड़ते, उन्हें जाने नहीं देते। मम्मी को भी बोलते कि पापा को रोक लें।
- मैं बहुत रोता, और फ़ोन करके अपने पड़ोसियों को मदद के लिए बुलाता।

प्रश्न 3. अगर कबीर तुम्हारा दोस्त होता, और उसके घर के आसपास आग जल रही होती तब तुम कबीर के लिए क्या करते?

- कबीर को कॉल करके उसका हालचाल पूछते। पूछते कि कैसे हो; खाना खाया या नहीं? तुम्हारे घर के सामान जल गए होंगे, तुम यहाँ मेरे घर आ जाओ। यहीं कपड़े ख़रीद देंगे, और तुम मेरी किताब को पढ़ सकते हो। जब तुम्हारा नया घर बनेगा तब चले जाना, अभी यहीं रह सकते हो।
- अपने घर में बुलाते, साथ ही उसके मम्मी-पापा और दादा-दादी को भी बुलाते।

- कबीर जब मेरे घर आता, उसकी देखभाल करते। पूछते कि कहीं लगी तो नहीं; चोट तो नहीं आई? उसे मलहम लगाते, खाना पकाकर खिलाते, और हमारे घर में सोने के लिए कहते।

प्रश्न 4. तुम्हें पता चला कि चैतू के मोहल्ले में आग जल रही है, उससे कॉल करके बात करो। तुम क्या बातें करोगे?

- सबसे पहले चैतू को हिम्मत देंगे। उसे कहेंगे कि डरो मत, सब ठीक होगा। हम तुम्हारे साथ हैं।
- तुम ठीक हो; खाना खाया या नहीं? अगर नहीं खाओगी तो बीमार पड़ जाओगी। मम्मी-पापा सब ठीक तो हैं? तुम उनको भी हिम्मत देना।
- तुम्हारा दोस्त कबीर कैसा है; सब ठीक तो है न उसके यहाँ?
- तुम कल स्कूल में आओगी क्या?
- कल पार्क में हमारे साथ खेलने आओगी क्या? अगर नहीं आ पाओगी तो हम लोग तुम्हारे घर आ जाएँगे।

बच्चों को कहानी सुनाना, चर्चा और गतिविधियाँ बहुत शानदार रहीं। मेरी तैयारी से लेकर बच्चों के साथ यह गतिविधि करने में बहुत आनन्द आया। बच्चों ने इसमें बहुत सहयोग दिया। ध्यान से सुनना, चर्चा करना, सवालों के जवाब देना, सब बहुत अच्छा और रोचक था। गतिविधि करने पर मुझे यह अनुभव मिला कि बच्चों को परस्पर संवादात्मक सत्र काफ़ी पसन्द आते हैं। यहाँ वे खुलकर अपनी भावनाओं को बता सकते हैं, कल्पना कर सकते हैं, और अपने जीवन में भी लागू करने की कोशिश कर सकते हैं। अपना डर, चिन्ता, दूसरों के प्रति संवेदनशील होना, समाज में क्या चल रहा है इसपर सवाल करना, अनुमान लगाना, समस्याओं का हल ढूँढ़ना, ये सारी चीज़ें कहानी कहने की गतिविधि के दौरान देखने को मिलीं।

संक्षेप में

एक शिक्षाकर्मी (शिक्षक) होने के नाते हमारा यह फ़र्ज़ बनता है कि हम बच्चों को अलग-अलग तरह की कहानियों की किताबों से अवगत कराएँ। उन किताबों से जो अलग-अलग विधाओं के बारे में बात करती हैं। मसलन, ऐसी किताबें जो जंगल की सैर करा दें; वे जो मौज-मस्ती, चुटकुले, मनोरंजन से भरी हों; जो बच्चों को सम्बोधित करते हुए उनके रोज़मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़े कामों को दर्शाती हों; बचपन की बहुलता को समझाने में मदद करती हों; सामाजिक-धार्मिक मुद्दों पर बात करती हों; वे किताबें जो परियों की कहानियाँ, लोककथाएँ, इतिहास बताती हों; आदि। जब हम बच्चों को ऐसी किताबें उपलब्ध कराएँगे, हम बच्चों के नज़रिए, उनके अनुभव, उनकी पसन्द-नापसन्द

अच्छे से जान सकेंगे। हम बच्चों की भावनाओं को समझ सकेंगे जिससे हमें उनसे बातचीत करने, घुलने-मिलने और पढ़ाने-सिखाने में काफ़ी मदद मिलेगी। पिपरिया विकासखण्ड के एकलव्य पुस्तकालय में पढ़ने वाले बच्चों में यह देखने को मिला है कि उन्हें एकलव्य प्रकाशन की *खिचड़ी, ज़िद्दी शन्नो, प्यारी मैडम, शलजम,* मुस्कान प्रकाशन की *बस्ती में चोर, पायल खो गई,* आदि के साथ पौराणिक लोककथाओं की और ओरिगामी किताबें बेहद पसन्द हैं। प्रथम बुक्स की यह छोटी पतली-सी किताब *वो रात* पठन स्तर 3 के लिए है, लेकिन यह सभी लोगों के लिए फ़ायदेमन्द और विचारणीय भी हो सकती है।

सन्दर्भ

मोहल्ला गतिविधि केन्द्र : यह एक शैक्षिक केन्द्र है जो साल 2020 में नर्मदा ज़िले के पिपरिया विकासखण्ड के कुछ गाँवों में गाँव के संचालक द्वारा संचालित किया जाता था। इसका संचालन अभी भी नियमित रूप से हो रहा है। इस केन्द्र में सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा पहली से पाँचवीं तक के बच्चों को प्रतिदिन स्कूल के पहले या स्कूल के बाद दो घण्टे भाषा, गणित, और दूसरी किताबों का अध्ययन करवाया जाता है।

मेलोडी खलखो एकलव्य फ़ाउण्डेशन के साथ प्रोजेक्ट एसोसिएट के रूप में काम करती हैं। वे मध्य प्रदेश के पिपरिया ब्लॉक में होलिस्टिक इनिशिएटिव टुवर्ड्स एजुकेशनल चेंज प्रोजेक्ट (HITEC) में काम से जुड़ी हैं। उन्होंने 2020 में अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से एमए किया है। वह विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ बाल साहित्य पढ़ना पसन्द करती है। वे पेंटिंग और कविताओं / लेखों को लिखने का भी आनन्द लेती हैं, और शिक्षा में गहरी रुचि रखती हैं।

सम्पर्क : melody.xalxo18_mae@apu.edu.in